सामान्य अध्ययन (प्रश्नपत्र-I)

भारतीय विरासत एवं संस्कृति

2024

प्रश्न : ऋग्वैदिक से उत्तर-वैदिक काल तक सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र में घटित परिवर्तनों को रेखांकित कीजिये। **(150 शब्द, 10 अंक)**

Underline the changes in the field of society and economy from the Rig Vedic to the later Vedic period.

उत्तर: ऋग्वैदिक (1500-1000 ईसा पूर्व) से उत्तर-वैदिक (1000-500 ईसा पूर्व) काल की अवधि में खानाबदोश जीवन शैली से लेकर स्थायी कृषि समाज के रूप में बदलाव देखा गया, जिससे सामाजिक व्यवस्थाओं के साथ आजीविका में व्यापक परिवर्तनों का मार्ग प्रशस्त हुआ।

मुख्य भाग		
पहलू	**ऋग्वैदिक काल**	**उत्तर-वैदिक काल**
वर्ण व्यवस्था	लचीली, व्यवसाय आधारित, जनजातीय एवं समतावादी समाज।	कठोर, पदानुक्रमित, चार अलग-अलग वर्ण: ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र।
महिलाओं की स्थिति	महिलाएँ अनुष्ठानों में भाग लेती थीं।	सती प्रथा और बाल विवाह का उदय हुआ।
पितृसत्ता	पितृसत्ता का लचीला होना, जीवनसाथी चुनने की स्वतंत्रता (जैसे- स्वयंवर)।	महिलाएँ घरेलू कार्यों तक ही सीमित थीं।
वैदिक शिक्षा	महिलाओं और पुरुष दोनों को ही वैदिक शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार था।	उच्च जातियों तक ही सीमित।
धन का प्रतीक	धन का प्रमुख प्रतीक मवेशी थे (जैसे- गविष्ठी)।	भूमि स्वामित्व और कृषि उत्पादकता धन के मुख्य प्रतीक बन गए।
कृषि का विस्तार	ग्रामीण और अर्द्ध खानाबदोश अर्थव्यवस्था।	अर्थव्यवस्था का आधार कृषि बन गई। विस्तृत कृषि (शतपथ ब्राह्मण)
व्यापार और वाणिज्य	व्यापार सीमित (मुख्यत: वस्तु-विनिमय आधारित) था।	व्यापार और वाणिज्य का विस्तार, सिक्कों (निष्क) का प्रचलन तथा श्रेणियों (गिल्ड) का उदय।
शिल्प और व्यवसाय	शिल्पकला सरल थी। व्यवसाय वंशानुगत नहीं थे।	विशिष्ट शिल्पों का उदय, वंशानुगत व्यवसाय।

निष्कर्ष: ऋग्वेद के खानाबदोश, समतावादी समाज से उत्तर-वैदिक काल में उदित कठोर जातिगत संरचना एवं कृषि अर्थव्यवस्था में परिवर्तन से गंगा घाटी में शहरीकरण (उदाहरण के लिये, महाजनपद) को बढ़ावा मिला।

प्रश्न : दक्षिण भारत में कला व साहित्य के विकास में काँची के पल्लवों के योगदान का मूल्यांकन कीजिये।

(150 शब्द, 10 अंक)

Estimate the contribution of Pallavas of Kanchi for the development of art and literature of South India.

उत्तर: पल्लवों ने तीसरी से 9वीं शताब्दी ई. तक शासन किया और वे सातवाहनों के सामंत थे। पल्लव राजा दक्षिण भारतीय कला, वास्तुकला और साहित्य के महान संरक्षक थे।

कला में पल्लवों का योगदान

- **मंदिर वास्तुकला:** पल्लवों ने चट्टान काटकर बनाए गए मंदिरों की शुरुआत की और वास्तुकला की द्रविड़ शैली की शुरुआत की, जो गुफा मंदिरों से लेकर अखंड रथों और अंतत: संरचनात्मक मंदिरों तक विकसित हुई, जिनका विकास चार चरणों में हुआ।
- महेंद्रवर्मन प्रथम ने चट्टानों को काटकर बनाए गए मंदिरों की शुरुआत की।
- मामल्लपुरम में अखंड रथ और मंडप, जिसका श्रेय नरसिंहवर्मन प्रथम को दिया जाता है, जैसे- पंचपांडव रथ।
- राजसिम्हा ने नरम बलुआ पत्थर से निर्मित संरचनात्मक मंदिरों की शुरुआत की। उदाहरण के लिये, काँची में कैलाशनाथ मंदिर। बाद के पल्लवों द्वारा निर्मित संरचनात्मक मंदिर। उदाहरण के लिये, वैकुंडपेरुमल मंदिर।
- **मूर्तिकला:** पल्लवों ने मामल्लपुरम में ओपन आर्ट गैलरी और गंगा अवतरण जैसी मूर्तिकला को काफी उन्नत किया। सित्तनवसाल की गुफाओं में उत्कीर्णित चित्रकारी उन्हीं की थी।

साहित्य में पल्लवों का योगदान

- पल्लव राजा महेंद्रवर्मन प्रथम ने संस्कृत साहित्य के संरक्षक के रूप में 'मत्तविलासप्रहसन' नाटक की रचना की।
- नयनार और अलवारों के योगदान से तमिल साहित्य का विकास हुआ।
- पेरुन्देवनार ने नंदीवर्मन द्वितीय के अधीन महाभारत का तमिल में 'भारतवेणवा' के रूप में अनुवाद किया।

निष्कर्ष: काँची के पल्लवों ने स्थापत्य, मूर्तिकला और साहित्य में अपने योगदान के माध्यम से एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत स्थापित की। मंदिर स्थापत्य में उनके नवाचारों और साहित्य के संरक्षण ने न केवल दक्षिण भारतीय कला को प्रभावित किया, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक इतिहास पर भी एक स्थायी प्रभाव डाला।

प्रश्न: "हालाँकि महान चोल शासक अभी मौजूद नहीं हैं लेकिन उनकी कला व वास्तुकला के क्षेत्र में उत्कृष्ट उपलब्धियों के कारण अभी भी उन्हें बहुत गर्व से याद किया जाता है।" टिप्पणी कीजिये। (250 शब्द, 15 अंक)

"Though the great Cholas are no more yet their name is still remembered with great pride because of their highest achievements in the domain of art and architecture. Comment.

उत्तर: चोलों (8-12वीं शताब्दी ईस्वी) को भारत के दक्षिणी क्षेत्रों में सबसे लंबे समय तक शासन करने वाले राजवंशों में से एक के रूप में याद किया जाता है। यह शासन पाँच शताब्दियों से भी अधिक समय तक चला, जहाँ चोल कला ने द्रविड़ मंदिर कला की पराकाष्ठा देखी, जिसके परिणामस्वरूप सबसे परिष्कृत इमारतों का निर्माण हुआ।

चोलकालीन मंदिरों की विशिष्टता

मंदिरों की ऊँची चारदीवारी तथा ऊँचा प्रवेशद्वार (गोपुरम), गोलाकार और वर्गाकार गर्भगृह, चरणबद्ध पिरामिड संरचना (विमान), अष्टकोणीय आकार में शीर्ष शिखर, मंदिरों की दीवारों पर जटिल मूर्तियाँ और शिलालेख, मंदिर परिसर के अंदर एक जल कुंड की उपस्थिति, अर्द्धमंडप, जैसे- स्तंभयुक्त मंडप।

मंदिर विकास में चोलों का योगदान

- बृहदेश्वर मंदिर जैसी अधिक विस्तृत संरचनाएँ।
- चोल काल में मंदिर बनाने के लिये ईंटों के स्थान पर पत्थरों का प्रयोग किया जाता था।
- गोपुरम नक्काशी और मूर्तियों की शृंखला के साथ अधिक उत्कृष्ट तथा सुव्यवस्थित संरचनाओं के रूप में विकसित हुए।
- चोलों ने मंदिर वास्तुकला में परिपक्वता और भव्यता लाकर विस्तृत पिरामिडनुमा मंज़िलें बनवाईं। उदाहरणार्थ, तंजावुर का शिव मंदिर।
- मंदिरों के शीर्ष पर सुंदर शिखर होते हैं जिन पर विस्तृत नक्काशी की जाती है। उदाहरणार्थ- गंगईकोण्डचोलपुरम मंदिर।
- पल्लवों द्वारा शुरू किये गए मंडप के प्रवेश द्वार पर द्वारपाल, चोलकालीन मंदिरों की एक अनूठी विशेषता बन गए।
- मंदिरों को कलात्मक पत्थर के खंभों से सजाया गया था, जिनमें लंबी शाखाएँ और पॉलिश की गई विशेषताएँ थीं। उदाहरण: ऐरावतेश्वर मंदिर में पहियेदार रथ की नक्काशी।

चोलकालीन मूर्तिकला

- चोलकालीन काँस्य मूर्तियाँ, जो अपनी असाधारण मूर्तिकला के लिये जानी जाती हैं, लुप्त मोम तकनीक का उपयोग करके बनाई गई थीं। उदाहरण के लिये, तांडव मुद्रा में नटराज की मूर्ति।
- उत्तर चोलकाल में मूर्तिकला में भूदेवी (पृथ्वी देवी) को भगवान विष्णु की छोटी पत्नी के रूप में प्रदर्शित किया गया है।
- चोलकालीन मंदिर मूर्तियों में आकर्षक अलंकरण, सुंदर सज्जावट देखने को मिलती है। उदाहरणार्थ, बृहदीश्वर मंदिर, तंजावुर।
- पार्वती चित्रण की स्वतंत्र मूर्तियों में उन्हें सुंदर त्रिभंगा मुद्रा में दर्शाया गया है।

निष्कर्ष: कला के क्षेत्र में चोल शासकों का मुख्य योगदान मंदिर निर्माण व मूर्ति निर्माण रहा है। चोल कला मूलत: पल्लव कला से विकसित हुई थी, किंतु वह पल्लव कला की नकल मात्र नहीं थी। उसकी अपनी अलग पहचान, विशिष्टता है तथा इसमें सजीवता के साथ-साथ नवीनता भी है।

स्थापत्य कला के साथ-साथ तक्षण (carving) कला के क्षेत्र में चोल कलाकारों ने अद्वितीय विशेषज्ञता का परिचय दिया है। उन्होंने देवी-देवताओं, राजाओं, राजपरिवार के सदस्यों की पाषाण मूर्तियों का निर्माण अत्यंत सजीवता के साथ किया है। उनके द्वारा बनवाई गई मूर्तियाँ सर्वांग मूर्तियों के रूप में हैं। इसमें लालित्य एवं नूतनता के साथ-साथ सौंदर्याकर्षण भी है।

चोल राजवंश के संरक्षण, भव्य मंदिरों, वास्तुशिल्प नवाचारों और मूर्तिकला कला को समर्थन के कारण यूनेस्को ने उनके मंदिरों को विश्व धरोहर स्थल के रूप में मान्यता प्रदान की है।

2023

प्रश्न: प्राचीन भारत के विकास की दिशा में भौगोलिक कारकों की भूमिका को स्पष्ट कीजिये। (150 शब्द, 10 अंक)

Explain the role of geographical factors towards the development of Ancient India.

उत्तर: प्राचीन भारत के विकास को दिशा देने में भौगोलिक कारकों की भूमिका महत्त्वपूर्ण थी। देश की विविध स्थलाकृतियाँ, जलवायु और प्राकृतिक संसाधनों के रूप में इन कारकों ने लोगों के आवास प्रतिरूप, कृषि परंपराओं तथा व्यापार मार्गों आदि को प्रभावित किया।

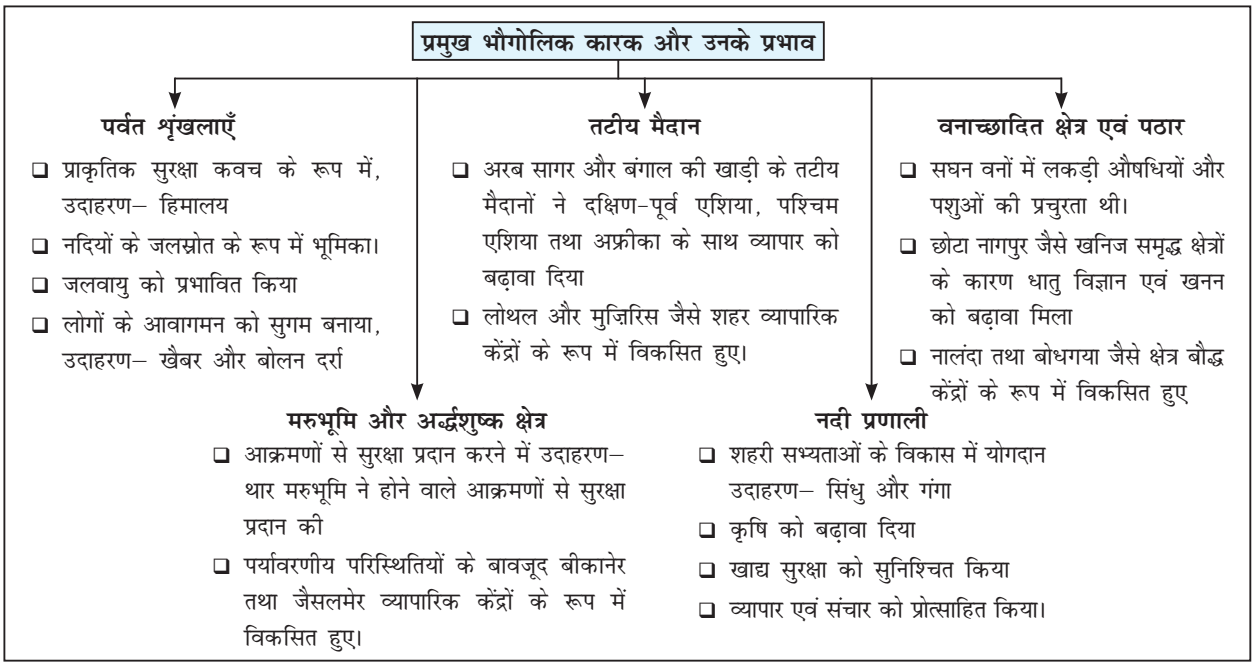

प्राचीन भारत के भौगोलिक कारकों ने न केवल समकालीन सभ्यता, संस्कृति, अर्थव्यवस्था व समाज को नई दिशा दी बल्कि विश्व स्तर पर भारत के संबंधों को प्रभावित करने के साथ इसकी विरासत को समृद्ध करने में निर्णायक भूमिका निभाई।

2022

प्रश्न: स्पष्ट करें कि मध्यकालीन भारतीय मंदिरों की मूर्तिकला उस दौर के सामाजिक जीवन का प्रतिनिधित्व करती है?

(150 शब्द, 10 अंक)

How will you explain that Medieval Indian temple sculptures represent the social life of those days.

उत्तर: मध्यकालीन भारतीय मंदिर की मूर्तियाँ जिन्हें मंदिर कला के रूप में भी जाना जाता है, उस काल के लोगों के राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन की झलक पेश करती है। जैसे खजुराहो मंदिर, चोलकालीन वृहदेश्वर मंदिर आदि।

मंदिरों की दीवारों और स्तंभों पर पाई गई मूर्तियाँ मध्ययुगीन भारत में लोगों के विश्वासों, मूल्यों रीति-रिवाज़ों और दैनिक जीवन के दृश्य का प्रतिनिधित्व प्रदान करती हैं।

मूर्तिकला द्वारा सामाजिक प्रतिनिधित्व के विभिन्न आयाम

- धर्म के विभिन्न रूपों की जानकारी।
- हिन्दू देवी-देवताओं के साथ-साथ पौराणिक कथाओं के दृश्यों को दर्शाना।
- सामाजिक रीति-रिवाज़ों जैसे विवाह और जुलूसों के साथ-साथ धन और शक्ति प्रदर्शन जैसे दृश्य।
- दैनिक गतिविधियों की जानकारी जैसे खेती, शिकार, खानपान आदि।
- उस काल की सामाजिक और आर्थिक संरचना की झलक।
- मंदिरों ने शैक्षिक केंद्रों के रूप में कार्य किया।
- धार्मिक मान्यताएँ जैसे शिव-पार्वती वैवाहिक निष्ठा का प्रतिनिधित्व।
- बौद्ध जीवन से संबंधित जातक कथाएँ जैसे अजंता की गुफा।
- सामाजिक बुराइयों का प्रतिनिधित्व जैसे देवदासी प्रथा।
- दसवीं शताब्दी के मध्य काँस्य निर्मित नटराज की प्रतिमा उन्नत प्रौद्योगिकी का उदाहरण।

अत: मध्ययुगीन भारतीय मंदिर की मूर्तियाँ एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक स्रोत के रूप में कार्य करती हैं, जो उस काल के लोगों के राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक जीवन का प्रतिनिधित्व करती हैं।

प्रश्न: भारतीय परंपरा और संस्कृति में गुप्तकाल और चोलकाल के योगदान पर चर्चा करें।

(250 शब्द, 15 अंक)

Discuss the main contributions of Gupta period and Chola period to Indian heritage and culture.

उत्तर: भारतीय इतिहास में स्वर्णकाल के रूप में गुप्त साम्राज्य की स्थापना तीसरी शताब्दी ईस्वी में चंद्रगुप्त प्रथम द्वारा की गई थी। चोलवंश की स्थापना 9वीं शताब्दी में विजयालय द्वारा दक्षिण भारत में की गई थी। ये दोनों भारतीय परंपरा और संस्कृति पर अमिट छाप छोड़ते हैं। गुप्त और चोल दोनों ने ही भारतीय परंपरा और संस्कृति में निम्नलिखित योगदान दिया–

कला और वास्तुकला	
गुप्त	**चोल**
गुप्त शैली का विकास, अजंता और एलोरा की गुफाएँ उत्तम चित्रों और मूर्तियों से सुशोभित। हिन्दू पौराणिक कथाओं के विभिन्न दृश्यों को दर्शाती हैं।	द्रविड़ शैली का चरमोत्कर्ष वृहदेश्वर मंदिर गंगईकोंड चोलपुरम मंदिर। (यूनेस्को के विश्व धरोहर स्थल)
ईंटों के मंदिर का निर्माण। जैसे- विदिशा का एरण में विष्णु-वराह मंदिर।	चोलकालीन नटराज की काँस्यमूर्ति सृजन, विनाश, आशीर्वाद और मोक्ष के मार्ग आदि को इंगित करती है।
देवगढ़ के दशावतार मंदिर में रेखा-देवल प्रकार के शिखर (नागर शैली)	तंजौर का शिवमंदिर सभी भारतीय मंदिरों में सबसे बड़ा मंदिर है। चोल मंदिरों में मंडप के प्रवेश द्वार पर द्वारपाल या रक्षकों की आकृतियाँ बनी होती थीं।

साहित्य	
गुप्त	**चोल**
इस अवधि में संस्कृत, प्राकृत और पाली साहित्य में कई साहित्यिक कार्यों का विकास कालिदास के नाटक, भर्तृहरि की कविता शामिल।	इस अवधि में तमिल भाषा में कई साहित्यिक कृतियों का विकास हुआ। सबसे उल्लेखनीय साहित्य तिरुक्कुरल है जो 1330 दोहों का संग्रह है।

धर्म	
गुप्त	**चोल**
वैष्णव धर्म के संरक्षक विष्णु के मंदिरों का निर्माण तथा गुप्त राजाओं द्वारा परमभागवत की उपाधि धारण करना।	शैव परंपरा का विकास वृहदेश्वर मंदिर और चिदंबरम मंदिर सहित भगवान शिव को समर्पित कई मंदिरों का निर्माण।

निष्कर्षत: कहा जाता है कि गुप्त और चोल को कला, वास्तुकला, साहित्य, धर्म, विज्ञान सहित कई उपलब्धियों और नवाचारों द्वारा चिन्हित किया गया। चोल वास्तुकला के बारे में फर्ग्यूसन का कथन है कि "चोलों ने दैत्यों की तरह सोचा और जौहरियों की तरह सँवारा"

प्रश्न: भारतीय मिथक, कला और वास्तुकला में सिंह एवं वृषभ की आकृतियों के महत्त्व पर विचार करें? (250 शब्द, 15 अंक)

Discuss the significance of the lion and bull figures in Indian mythology, art and architecture.

उत्तर: मानव-पशु संबंधों के निशान लगभग 12,000 वर्ष पहले ऊपरी पुरापाषाणकाल के चित्रों में दिखाई देते हैं। पाषाण युग से लेकर आधुनिक भारत तक विभिन्न पहलुओं में "सिंह और बैल" की मौजूदगी के चिह्न पाए गए हैं।

सिंह और बैल के भारतीय मिथक

- ❑ सिंह देवी दुर्गा का वाहन
- ❑ शक्ति का प्रतिनिधित्व
- ❑ शिव का नंदी बैल
- ❑ जिसका अर्थ 'प्रसन्नता'

स्थापत्य

- ❑ सिंधु घाटी में काँस्य का बैल
- ❑ सिंधु घाटी सभ्यता में काँस्य की उपस्थिति
- तमिलनाडु रॉक आर्ट बैल प्रागैतिहासिक पुरुषों को बैलों को पकड़ने और उन्हें वश में करने का प्रयास
- ❑ भारत का राष्ट्रीय प्रतीक अशोक के सारनाथ सिंह स्तंभ का अंगीकरण चार सिंह, घोड़ा, बैल
- ❑ **सिंह:** आत्मज्ञान की प्राप्ति को दर्शाता है।
- ❑ **बैल:** वृषभ राशि को दर्शाता है।

वास्तुकला

मौर्य स्तंभ

स्तंभ के शीर्ष भाग पर बैल, शेर, हाथी आदि की बड़ी आकृतियाँ। सिंह का चिह्न सार्वभौमिक सम्राट की शक्ति का संकेत, जिसने अपने सभी संसाधनों को धर्म की जीत के लिये समर्पित कर दिया

साँची का स्तूप

मध्य प्रदेश में साँची स्तूप अशोक का सबसे प्रसिद्ध स्तूप, तोरण में वृक्ष के साथ सिंह और बैल की नक्काशी पाई गई है।

सिंह एवं वृषभ की आकृतियों का महत्त्व

- इमारतों मंदिरों में चिह्नित देवताओं और राजाओं की शक्ति का प्रतीक।
- सिंह शक्ति तथा बैल उर्वरता और समृद्धि का प्रतीक है।
- पौराणिक कथाओं और कलात्मक परंपराओं की स्थायी विरासत की याद दिलाते हैं।

अशोक स्तंभ से लेकर वृहदेश्वर मंदिर तक 'सिंह' और 'बैल' अपनी राजसी उपस्थिति से लोगों को प्रेरित और विस्मित करते रहे हैं। वे भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के विकास और परिवर्तन के चरणों के साक्षी रहे हैं।

अतिरिक्त जानकारी: वर्तमान में नये संसद भवन परिसर में चार सिंहों वाले अशोक स्तंभ की मूर्ति को स्थापित किया गया है।

2021

प्रश्न: भक्ति साहित्य की प्रकृति का मूल्यांकन करते हुए भारतीय संस्कृति में इसके योगदान का निर्धारण कीजिये?

(150 शब्द, 10 अंक)

Evaluate the nature of the Bhakti literature and its contribution to Indian culture.

उत्तर : भक्ति आंदोलन का विकास सातवीं और 12वीं शताब्दी के मध्य तमिलनाडु में हुआ। मूल रूप से दक्षिण में 9वीं शताब्दी में शंकराचार्य द्वारा शुरू किया गया यह आंदोलन भारत के सभी हिस्सों में 16वीं शताब्दी तक विस्तृत हुआ और कबीर, नानक तथा श्री चैतन्य ने इसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

भक्ति साहित्य की प्रकृति

अंतर धार्मिक सद्भाव	समावेशी साहित्य
❑ भक्ति और सूफी आंदोलन ने एक दूसरे का समर्थन किया।	❑ संप्रदायवाद और जातिवाद को दूर करने का उपदेश
❑ स्थानीय भाषाओं का अपनाना जिससे जनता आसानी से समझ सकती थी।	❑ भक्ति साहित्य ने जातियों और बहिष्कृतों को शामिल करने का आह्वाहन किया।
❑ भक्तिपंथ का प्रसार।	
❑ विभिन्न सूफी संतों के पाठ को सिखों के धार्मिक सिद्धांतों में जगह मिली।	❑ मुस्लिम कवियों ने कविताओं से हिन्दू धर्म और इस्लाम का सांस्कृतिक संश्लेषण किया।
❑ श्री गुरु ग्रंथ साहिब में कबीर की शिक्षाओं को शामिल किया गया।	

भक्ति साहित्य का योगदान

- भक्ति साहित्य ने देश के विभिन्न भागों में स्थानीय भाषा के विकास को बढ़ावा दिया।
- बंगाली भाषा का उपयोग चैतन्य और कवि चंडीदास द्वारा, जिन्होंने राधा-कृष्ण के प्रेम के विषय पर विस्तार से लिखा।
- शंकरदेव ने 15वीं शताब्दी में असम में वैष्णव धर्म का प्रसार किया।
- एकनाथ और तुकाराम जैसे संतों के हाथों मराठी अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँची।
- कबीर, नानक, तुलसीदास जैसे- अन्य प्रमुख संतों ने आध्यात्मिक व्याख्या के साथ क्षेत्रीय साहित्य और भाषा में योगदान दिया।
- नए संप्रदायों का उदय जैसे- सिख धर्म, कबीर पंथ आदि।
- माधवाचार्य द्वैत रामानुजाचार्य विशिष्टता अद्वैत आदि में वेदांत के बाद के विचारों की खोज की गई।
- सरल, सुलभ शैलियों, वचन (कन्नड़) साखी, दोहा को विभिन्न भाषाओं में पेश किया।

भक्ति आंदोलन के विचार उनके द्वारा छोड़े गए विशाल साहित्य के माध्यम से समाज के सांस्कृतिक लोकाचार में व्याप्त रहे। उनके विचारों में समानता ने न केवल हमें संभावित आंतरिक संघर्षों से बचाया बल्कि सहिष्णुता की भावना का निर्माण किया।

2020

प्रश्न: शैलकृत स्थापत्य प्रारंभिक भारतीय कला एवं इतिहास के ज्ञान के अति महत्त्वपूर्ण स्रोतों में से एक का प्रतिनिधित्व करता है विवेचना कीजिये? (150 शब्द, 10 अंक)

The rock-cut architecture represents one of the most important sources of our knowledge of early Indian art and history. Discuss.

उत्तर : प्रारंभिक भारतीय कला एवं इतिहास को जानने के लिये उपयोगी सामग्रियों को दो भागों में बाँटा जाता है–

1. पुरातात्त्विक 2. साहित्यिक

पुरातात्त्विक स्रोत में शैलकृत स्थापत्य का महत्त्वपूर्ण स्थान है। शैलकृत स्थापत्य एक संरचना को ठोस प्राकृतिक चट्टान से तराशकर ढालने की कला है। प्राचीन भारत की कुछ विशिष्ट चट्टानों को काटकर बनाई गई संरचनाओं में चैत्य, बिहार, मंदिर आदि शामिल हैं।

शैलकृत स्थापत्य भारतीय कला का प्रतीक

- मध्य पाषाणकाल ने पहला उपयोग और संशोधन देखा। प्राकृतिक गुफाओं की लटकती चट्टानों को काटकर डिज़ाइन से सजाया गया था।
  उदाहरण– भीमबेटका
- तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व के बिहार के बराबर और नागार्जुनी पहाड़ियों में आजीवकों तथा जैनियों के लिये मौर्यों द्वारा गुफाओं का निर्माण।
  इन गुफाओं को धनुषाकार मेहराबों के लिये भी जाना जाता है।
- गुप्त और वकाटक काल शैलकृत स्थापत्य का स्वर्ण युग था। डिज़ाइन अधिक विस्तृत और सौंदर्यशास्त्र अधिक स्पष्ट हो गया।
  उदाहरण– अजंता तथा बाघ की गुफाएँ
- पल्लव काल में एकाश्मक मंदिरों का निर्माण। ग्रेनाइट के पत्थर के एक बड़े खंड से तराशे गए।
  उदाहरण– मामलपुरम् के रथ मंदिर।
- राष्ट्रकूटों द्वारा एलोरा में निर्मित कैलाशनाथ मंदिर।

ऐतिहासिक महत्त्व

- शैलकृत स्थापत्य ज़्यादातर धार्मिक हैं, लेकिन धर्म, वाणिज्य और समाज के बीच एक महत्त्वपूर्ण संबंध को भी दर्शाते हैं।
- गुफा की दीवारों या मूर्तियों के माध्यम से प्रस्तुत की गई कहानियाँ ऐतिहासिक जानकारी के मूल्यवान स्रोत हैं।
- वास्तुकला उपमहाद्वीप की बदलती वास्तविकताओं को भी दर्शाती है, शैलकृत स्थापत्य के विषय बदल गए क्योंकि छठी-आठवीं शताब्दी के दौरान बौद्ध धर्म एक नए हिन्दू धर्म के सामने कमज़ोर हो गया।
- बौद्ध कहानियों का स्थान हिन्दू देवताओं और पौराणिक कथाओं ने ले लिया।
- दक्षिणी भारतीय हिन्दू राजाओं के संरक्षण में विकसित कई गुफा मंदिर हिन्दू देवी-देवताओं को समर्पित थे।

शैलकृत स्थापत्य भारतीय इतिहास में एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। उनके महत्त्व को ठीक ही रेखांकित किया गया है, क्योंकि यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में कई शैलकृत संरचनाओं को शामिल किया गया है। उदाहरण अजंता की गुफाएँ, महाबलीपुरम् में स्मारकों का समूह आदि।

प्रश्न: भारत में बौद्ध धर्म के इतिहास में पाल काल अति महत्त्वपूर्ण चरण है। विश्लेषण कीजिये। (150 शब्द, 10 अंक)

Pala period is the most significant phase in the history of Buddhism in India. Enumerate.

उत्तर : पाल वंश की स्थापना गोपाल ने 8वीं शताब्दी में की, जिसने 11वीं शताब्दी के अंत तक बंगाल और बिहार के क्षेत्रों पर शासन किया। पाल शासक बौद्ध थे, इन्होंने अपनी नीतियों द्वारा बौद्ध धर्म के संवर्द्धन में मदद की।

बौद्ध धर्म के इतिहास में पालकाल का महत्त्व

- **धार्मिक सहिष्णुता**
  - अधिकांश विषय हिन्दू धर्म से संबंधित
  - धार्मिक सहिष्णुता के दृष्टिकोण का पालन किया। हिन्दू तंत्रवाद ने वज्रयान दर्शन को जन्म देते हुए बौद्ध धर्म में अपना रास्ता बनाया।
- **वास्तुकला**
  - विभिन्न महाविहारों, स्तूपों, चैत्यों, मंदिरों का निर्माण। जैसे- धर्मपाल द्वारा सोमपुरम महाविहार का निर्माण (भारतीय उपमहाद्वीप के सबसे बड़े विहारों में से एक)
- **मूर्तिकला**
  - पत्थरों और काँस्य की अधिकांश मूर्तियों ने बौद्ध धर्म से प्रेरणा प्राप्त की। जैसे– नालंदा से दो खड़ी अवलोकितेश्वर मूर्तियाँ शामिल तथा मुकुटधारी बुद्ध भी पाल कला में दिखाई देने लगे। (धीमन तथा विथपाल पाल काल के कांस्य एवं प्रस्तर मूर्ति के अग्रणी कलाकार)
- **चित्रकला**
  - बौद्ध धर्म में महायान पंथ ने अपने तंत्रयान-वज्रयान पहलुओं को विकसित किया। जैसे- पाठ पर लघुचित्र अष्टसहस्त्रिका प्रज्ञापारमिता।
- **विश्वविद्यालय**
  - भारत में और भारत के बाहर बौद्ध धर्म को बढ़ावा देने के लिये विक्रमशिला, ओदंतपुरी विश्वविद्यालय की स्थापना।
  - नालंदा विश्वविद्यालय को संरक्षण प्रदान किया।
- **विदेशी नीति**
  - विभिन्न संस्कृतियों के साथ संबंध, जैसे– दक्षिण-पूर्व एशिया और मध्य एशिया के साथ संबंध देवपाल ने नालंदा में स्थापित बौद्ध मठ के रखरखाव के लिये जावा के शैलेंद्र राजा के अनुरोध पर पाँच गाँव दान में दिये।
  - कई बौद्ध शिक्षकों ने विश्वास फैलाने के लिये दक्षिण पूर्व एशिया की यात्रा की। जैसे– आतिश दीपांकर ने सुमात्रा में उपदेश दिये।

पाल राजवंश ने बिना किसी पूर्वाग्रह के बौद्ध धर्म को फलने-फूलने और चर्चा करने के लिये वातावरण तैयार किया। इसने विचारों को दुनिया भर में फैलाने में भी मदद की, जिसकी अमिट छाप आज भी भारतीय विरासत में देखी जा सकती है।

प्रश्न: भारतीय दर्शन एवं परंपरा ने भारतीय स्मारकों की कल्पना आकार देने एवं उनकी कला में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विवेचना कीजिये? (250 शब्द, 15 अंक)

Indian philosophy and tradition played a significant role in conceiving and shaping the monuments and their art in India. Discuss.

उत्तर : भारतीय दर्शन भारतीय उपमहाद्वीप में विकसित दार्शनिक परंपराओं को संदर्भित करता है। इसमें आमतौर पर हिन्दू बौद्ध और जैन दर्शन शामिल हैं। बौद्ध स्तूप और चैत्य से हिन्दू मंदिर तक और फिर मुस्लिम मस्जिद या ईसाई चर्च तक, धर्म के साथ गहराई से एकीकृत दर्शन ने भारत में कला और वास्तुकला को प्रेरित किया है।

प्राचीनकालीन स्मारकों पर भारतीय दर्शन का प्रभाव

- हड़प्पाकालीन घरों के नक्शे वर्तमान तक बनाए जाने वाले घरों के ढाँचों को प्रभावित करते हैं। जैसे चौकोर आँगन के चारों ओर कमरों का निर्माण।
- अशोक स्तंभ स्तूप बौद्ध दर्शन से प्रभावित, जैसे- सारनाथ के स्तंभ का चक्र बुद्ध के धर्मचक्रप्रवर्तन का प्रतीक और स्तूपों का हल बौद्ध धर्म के त्रिरत्नों का प्रतीक।
- लोमस ऋषि, अजंता, एलोरा गुफा स्थापत्य आजीवक, जैन, बौद्ध धर्म से प्रभावित।
- गुप्त काल के बाद हिन्दू मंदिर वास्तुकला का विकास, तीन विशिष्ट शैलियाँ-नागर, द्रविड़, बेसर।
- मंदिरों की वास्तुकला पौराणिक-कथाओं से प्रभावित दशावतार मंदिर, वृहदेश्वर मंदिर आदि।
- एलोरा का कैलाश मंदिर (8वीं शताब्दी) या मामल्लपुरम् (7वीं, 8वीं शतब्दी) में स्मारकों का समूह, जैसे- मोनोलिथिक मंदिर, जिसमें पुराणों और महाभारत के दृश्य आदि।

मध्यकालीन स्मारकों पर भारतीय दर्शन का प्रभाव

- अकबर का दीन-ए-इलाही सभी महत्त्वपूर्ण धर्मों का सार हिन्दू, इस्लाम, जैन, ईसाई, बौद्ध आदि।
- संस्कृतियों के बीच संश्लेषण, जिसने संस्कृति के लगभग सभी क्षेत्रों में नई दार्शनिक और धार्मिक परंपराओं और शैलियों को जन्म दिया जैसे– इंडो-इस्लामिक शैली। हुमायूँ का मकबरा, ताजमहल आदि।

आधुनिक स्मारकों पर भारतीय दर्शन का प्रभाव

- ब्रिटिश औपनिवेशिक काल के दौरान पूरे भारत में नियोक्लासिकल, गोथिक सहित यूरोपीय शैली प्रचलित।
- इंडो-इस्लामिक + यूरोपीय शैली = इंडो-सारसेनिक शैली उदाहरण- चेपक पैलेस, विक्टोरिया मेमोरियल आदि।

स्मारकों की वास्तुकला और आंतरिक सज्जा को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक भारतीय दर्शन और परंपराएँ हैं, लेकिन इनको व्यापार और सांस्कृतिक संपर्क जैसी गतिविधियों ने भी प्रभावित किया। इन स्मारकों के महत्त्व को देखते हुए, इनके संरक्षण के लिये भारत सरकार द्वारा एडॉप्ट एवं हेरिटेज योजना चलाई जा रही है।

प्रश्न: मध्यकालीन भारत में फारसी साहित्यिक स्रोत उस काल के युगबोध का प्रतिबिंब है। टिप्पणी कीजिये।

(250 शब्द, 15 अंक)

Persian literary sources of medieval India reflect the spirit of the age. Comment.

उत्तर: मध्ययुगीन भारत के फारसी साहित्यिक स्रोत उस समय के विचार, सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक, राजनीतिक संस्थानों या युग की भावना को दर्शाते हैं। फारसी शासकों की पसंदीदा भाषा थी, दिल्ली सल्तनत और मुगलों ने इसे बढ़ावा दिया। यह वह समय था जब फारसी कविता साहित्य और इतिवृत्तों को संरक्षण प्राप्त था।

फारसी साहित्यकार और साहित्यिक स्रोत युग की भावना को दर्शाते हैं–

- सल्तनत और मुगल इतिहास को जानने का प्रमुख स्रोत जैसे- हसन निजामीकृत ताजुल मासिर से मुहम्मद गोरी के आक्रमण और गुलाम वंश का आरंभिक इतिहास।
- अमीर खुसरो को पंच गज, मतला-उल-अनवर, लैला मजनूँ आइना-ए-सिकंदरी और हश्त बिहिश्त जैसी प्रमुख कृतियों को श्रेय।
- अमीर खुसरो ने पहली बार हिन्दी शब्दों और मुहावरों का इस्तेमाल किया और अपनी गज़लों में हिन्दी और फारसी का प्रयोग किया।
- खजाइन-उल-फुतुह में खिलजियों की दक्षिण विजय का उल्लेख।
- नूह सिपहर में अमीर खुसरो भारत की जलवायु, पेड़-पौधे, पक्षी और लोगों की प्रशंसा व नज़र आती हैं।

मानव में देवत्व का दर्शन: आमिर हसन सिज्जी द्वारा लिखित फवैद-उल-फौवाद। सूफी साहित्य रुह (आत्मा), ईश्वरीय निकटता (कुर्बत) के विचारों को दर्शाता है।

- अबुल फजल एक गतिशील तर्कवादी विचारक था। अकबरनामा में मुगलकाल का चित्रण किया।
- शम्स सिराज अफीफ ने तकीह-फिरोज़ शाही लिखा, जो फिरोजशाह तुगलक (14वीं शताब्दी) के शासन को समझने के लिये महत्त्वपूर्ण।
- ख्वाजा नजम-उद-दीन हसन की 'फवैद-उल-फौद' निजामुद्दीन औलिया के साथ बातचीत का महत्त्वपूर्ण दस्तावेज़। सूफी दर्शन पर महत्त्वपूर्ण दस्तावेज़।
- दारा शिकोह को संस्कृत से फारसी में कई हिन्दू धर्मग्रंथों के अनुवाद का श्रेय। सिर्र-ए-अकबर उपनिषदों का फारसी अनुवाद है। उन्होंने भागवत गीता का फारसी भाषा में अनुवाद भी किया।
- दक्षिण भारत में आदिल शाही शासकों ने फारसी को संरक्षण दिया। मुहम्मद हुसैन तबरेजी, मलिक कुमी ने उर्दू भाषा की नई विशेषता को स्थानीय भाषा के साथ एकीकृत किया, जिसे दक्षिणी उर्दू कहा जाता है।

मुसलमानों के उपमहाद्वीप में आने के साथ फारसी भी भारत में आई जो विविध धर्मों, भाषाओं और संस्कृतियों का संगम है और जिसमें अपनाने और सम्मिश्रण करने और फिर एक समग्र निर्माण करने की परंपरा है। शेरवानी के अनुसार "यह देश में मौजूद सांस्कृतिक सद्भावना की सामान्य प्रवृत्ति का प्रतीक था।"

2019

प्रश्न: गांधार कला में मध्य एशियाई एवं यूनानी-बैक्ट्रियाई तत्त्वों को उजागर कीजिये? (150 शब्द, 10 अंक)

Highlight the Central Asian and Greco-Bactrian elements in the Gandhara art.

उत्तर: गांधार कला बौद्ध दृश्यकला की एक शैली है, जो पहली शताब्दी ईसा पूर्व से 7वीं शताब्दी ईस्वी के बीच वर्तमान उत्तर पश्चिमी पाकिस्तान और पूर्वी अफगानिस्तान क्षेत्र में विकसित हुई थी। यह क्षेत्र कई शासकों के राजनीतिक प्रभाव में आया, जिसके परिणामस्वरूप यहाँ कला की एक मिश्रित शैली का उदय हुआ।

गांधार की मूर्तिकला की परंपरा में बैक्ट्रिया, पार्थिया और स्थानीय गांधार परंपरा का संगम हुआ था। इस कला शैली के वास्तविक संरक्षक सीथियन और कुषाण शासक रहे, जैसे कनिष्क।

गांधार कला में मध्य एशियाई तत्त्व

- स्तूप और मठ गहरे शिष्ट में उकेरे गए।
- गांधार के बौद्ध अभिलेखों में खरोष्ठी लिपि मिली है।
- बुद्ध के सिर के पीछे गोलाकार आभामंडल का प्राचीन फारसी और ग्रीक कला के सौर देवताओं से संबंद्ध था।
- सिर पर शंक्वाकार और नुकीले सदृश्य आकृति सीथियन टोपी से मिलती-जुलती है।
- गांधार कला में अग्नि पूजा का बारंबार चित्रण संभवत: ईरानी से ग्रहण किया गया था।

गांधार कला में बैक्ट्रियाई तत्त्व

- गांधार स्कूल ने रोमन धर्म की मानव रूपी परंपराओं को अपनाया और बुद्ध को एक युवा अपोलो जैसे चेहरे के साथ प्रस्तुत किया। (बुद्ध को मानव सदृश्य आकृति में)
- एक शीर्ष गाँठ में लहरदार बाल, कभी-कभी चेहरे पर मूँछें, भौहों के बीच उरना (एक बिंदु या तीसरी आँख), लंबी कान की बाली।
- गांधार कला ने शास्त्रीय रोमन कला में शामिल अन्य रूपांकनों और तकनीकों में बेल स्क्रॉल, माला ट्राइटन और सेंटॉर्स शामिल हैं।
- सांकेतिक अभिव्यक्ति जैसे शांति, तीक्ष्ण रूपरेखा, चिकनी सतह, अभिव्यंजक आदि को दर्शाने वाली फिजियोनॉमिक विशेषताएँ आकर्षण का केंद्रबिंदु है।

गांधार कला में आत्मसात् किये गए विदेशी तत्त्वों ने न केवल इसे कलात्मक उपलब्धियों के एक उच्च स्तर पर प्रतिष्ठित किया बल्कि भारतीय कला इतिहास में पहली बार मानव रूप का नैसर्गिक चित्रण भी संभव किया।

2018

प्रश्न: भारतीय कला विरासत का संरक्षण वर्तमान समय की आवश्यकता है। चर्चा कीजिये? (150 शब्द, 10 अंक)

Safeguarding the Indian art heritage is the need of the moment. Discuss.

उत्तर : भारत एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत वाला देश है, जिसकी मूर्त तथा अमूर्त विरासत के माध्यम से यहाँ की प्राचीन परंपरा, इतिहास कला तथा संस्कृति के दर्शन होते हैं। यहाँ की प्राचीन विरासत बहुमुखी भारतीय संस्कृति के साथ-साथ यहाँ के समृद्ध अतीत की झलक भी प्रस्तुत करती है।

औद्योगीकरण तथा उपभोक्तावादी संस्कृति के दौर में राष्ट्र के साथ ही अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर (यूनेस्को) प्राचीन धरोहरों को संरक्षित करने पर बल। इनको निम्न बिंदुओं से समझा जा सकता है–

- भारतीय कला के संरक्षण हेतु, जैसे बिहार की मंजूषा पेंटिंग, पारंपरिक कठपुतली कला, पारसी कढ़ाई, नागा शिल्प, ठोकरा हस्तकला आदि।
- विश्व मंच पर भारतीय सभ्यता का प्रतिनिधित्व।
- कला और शिल्प आय का स्रोत। जैसे आदिवासी समुदायों के लिये।
- पर्यटन के लिये आकर्षण का केंद्र, जैसे ताजमहल, लाल किला आदि।
- भारत की विविधता में एकता का प्रतिनिधित्व। (अर्थात् अपने मूल देश तथा प्रवासी भारतीयों के मध्य सेतु निर्माण)
- विश्व राजनीति में सॉफ्ट पावर के रूप में।

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि भारत की प्राचीन कला व विरासत को संरक्षित किया जाना अति आवश्यक है। इस संदर्भ में भारतीय संविधान में अनुच्छेद 49 तथा 51क (च) को देखा जा सकता है। इसके अलावा भारत सरकार द्वारा निजी क्षेत्र से मैमोरैंडम ऑफ अंडरस्टैंडिंग योजना तथा हृदय योजना तथा एडॉप्ट द हेरिटेज योजना क्रियान्वित की जा रही है।

प्रश्न: भारत के इतिहास की पुनर्रचना में चीनी और अरबी यात्रियों के वृत्तांतों के महत्त्व का आकलन कीजिये। (150 शब्द, 10 अंक)

Assess the importance of the accounts of the Chinese and Arab travelers in the reconstruction of the history of India.

उत्तर : भारतीय इतिहास के पुनर्निर्माण में विदेशी यात्रियों (चीनी और अरबी) का योगदान अतुलनीय है। इनके विवरणों से भारत के तात्कालिक इतिहास पर चतुर्दिक् प्रकाश पड़ता है। यही कारण है कि इनके वृत्तांतों का उपयोग करने पर अतीत को नए दृष्टिकोण से देखना संभव हुआ।

इतिहास की पुनर्रचना में चीनी यात्रियों का योगदान

- यात्री-फाहियान (पाँचवीं शताब्दी में चंद्रगुप्त, विक्रमादित्य के काल में), ह्वेनसांग हर्षवर्धन के काल (630 ईस्वी में) और इत्सिंग 671 ईस्वी
- हर्षकालीन भारत का प्रत्यक्षदर्शी वर्णन
- भारतीय समाज का सुखद और आदर्श प्रस्तुत करना
- बौद्ध धर्म साहित्य और संस्कृति का योगदान
- भारत की जलवायु, उपज, शहरों, जाति व्यवस्था, रीति-रिवाजों का वर्णन
- गुप्तकालीन भारत की जानकारी

भारतीय इतिहास की पुनर्रचना में अरबी वृत्तांत का योगदान

- सिंध एवं हिंद का भौगोलिक राजनीतिक वर्णन
- यात्री-अलबरूनी, इब्नबतूता, अलमसूदी
- स्थानों एवं नगरों का वर्णन उदाहरणत: भारत के अनेक नगरों का वर्णन किया
- यात्रियों के समयकाल में स्त्रियों की स्थिति उदाहरण: अलबरूनी के अनुसार सती प्रथा, बाल विवाह मौजूद थे
- राष्ट्रकूटों एवं प्रतिहारों के बारे में जानकारी
- पुस्तकें (जिसमें भारत के स्थानों व नगरों का विवरण है)- 'किताबुल मसालिक वल ममलिफ', 'मुरूज अल-धहब', 'किताब अल-अकालिम'

इस तरह उपर्युक्त विवरण के आधार पर कहा जा सकता है कि भारतीय इतिहास की पुनर्रचना के विभिन्न साधनों के रूप में चीनी एवं अरबी यात्रियों के विवरण महत्त्वपूर्ण हैं, लेकिन इनके स्वतंत्र एवं तुलनात्मक अध्ययन की आवश्यकता है, ताकि प्रामाणिक तथ्यों के आधार पर इतिहास का पुनर्निर्माण किया जा सके।

प्रश्न: श्री चैतन्य महाप्रभु के आगमन से भक्ति आंदोलन को एक असाधारण नई दिशा मिली थी। (250 शब्द, 15 अंक)

The Bhakti movement received a remarkable re-orientation with the advent of Sri Chaitanya Mahaprabhu. Discuss.

उत्तर : भक्ति आंदोलन की उत्पत्ति और विकास के मध्यकालीन भारत के धार्मिक जीवन के क्षेत्र में एक नई चेतना का विकास किया। बंगाल व पूर्वी भारत में भक्ति आंदोलन की शुरुआत मूलत: एक धार्मिक आंदोलन के रूप में हुई, जिसमें समाज सुधार के तत्त्वों का समावेश श्री चैतन्य महाप्रभु के आगमन (1509 से 1534 तक) से संभव हो सका।

भक्ति आंदोलन को नई दिशा देने में चैतन्य महाप्रभु की भूमिका।

- हरिनाम संकीर्तन प्रणाली की शुरुआत जैसे- इस्कॉन टेंपल में इसकी प्रासंगिकता को आज भी देखा जा सकता है। → वैष्णववादी भक्ति को पुनर्जीवित किया
- धर्म, जाति के भेदभाव को समाप्त करना
- सामाजिक पुनरुत्थान
- तांत्रिक मान्यताओं का खंडन
- कृष्णभक्ति एवं गुरु के प्रति श्रद्धा जैसे दो सिद्धांतों को महत्त्व दिया, जैसे– भारतीय परंपरा में रासलीला की शुरुआत
- मोक्ष प्राप्ति हेतु गुरू के मार्गदर्शन को अनिवार्य माना

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि चैतन्य ने मध्यकालीन भारत के दौरान विकसित भक्ति आंदोलन के माध्यम से न केवल हिन्दू धर्म को पुनर्स्थापित किया अपितु समाज में विद्यमान बुराइयों व कुरीतियों को भी दूर करने का प्रयास किया।

अतिरिक्त जानकारी

- चैतन्य महाप्रभु को गौड़ीय वैष्णव धर्म का संस्थापक माना जाता है।
- भक्तिकालीन कवियों में एकमात्र कवि जिन्होंने मूर्ति पूजा का विरोध नहीं किया।
- ईश्वर को कृष्ण या हरि का नाम दिया।

प्रश्न: अंग्रेज़ किस कारण भारत से करारबद्ध श्रमिक अन्य उपनिवेशों में ले गए थे? क्या वे वहाँ पर अपनी सांस्कृतिक पहचान को परिरक्षित रखने में सफल रहे हैं?

(200 शब्द, 15 अंक)

Why indentured labour was taken by British from India to other colonies? Have they been able to preserve their cultural identity over there?

उत्तर: ब्रिटेन में औद्योगिक क्रांति की सफलता ने उपनिवेशवादी प्रवृत्ति को जन्म दिया। एशिया, अफ्रीका के तमाम देशों में ब्रिटेन ने अपने उपनिवेश स्थापित किये। इन देशों में बागानी, खेत, कृषि, खनन इत्यादि जैसी गतिविधियों में कार्य करने के लिये बड़ी संख्या में करारबद्ध मज़दूरों को भारत से ले जाया गया।

करारबद्ध श्रमिकों को भारत से उपनिवेशों में ले जाने के कारण

- अमेरिका में खेती और खनन पूर्णत: इन्हीं श्रमिकों पर आधारित
- वेतन के नाम पर केवल इन श्रमिकों को रहने-खाने को दिया जाता था

सांस्कृतिक पहचान को विभिन्न देशों में परिरक्षित रखने में भारत की सफलता

इंडोनेशिया
- रहन-सहन, खान-पान पर भारतीय प्रभाव
- हिंदू सभ्यता की जीवंतता देखी जा सकती है, उदाहरण– यहाँ के नोटों पर गणेश की फोटो होना; एयरलाइंस का लोगो-गरुड़ पक्षी
- रामलीला

कनाडा
- भारतीय संस्कृति को देखा जा सकता है
- मक्के की रोटी, सरसों का साग, ठंडी लस्सी
- भाँगड़ा, गिद्दा में पंजाब की झलक
- अकाली सिक्ख टेंपल में तीज का त्यौहार मनाया जाना

मॉरीशस
- रामायण की अनुगूंज आज भी देखी जा सकती है।
- धार्मिक कार्यक्रमों को देखने-सुनने वालों का बड़ा वर्ग उपस्थित
- भारतीय विषयों पर सिनेमाघरों, दुकानों, बसों के नाम

फिजी
- भारतीय त्योहार धूमधाम से मनाया जाना, उदाहरण- दीपावली
- भारतीय घरों में आरती और हनुमान चालीसा का पाठ होना

उपर्युक्त विवेचना के आधार पर कहा जा सकता है कि आधुनिक वैश्वीकरण के इस दौर में पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव ज़रूर पड़ा है, लेकिन अभी भी जिन देशों में अंग्रेज़ों द्वारा मज़दूरों के रूप में भारतीयों को ले जाया गया, वहाँ वे अपनी संस्कृति को परिरक्षित रखने में काफी हद तक सफल रहे हैं।

2017

प्रश्न: आप इस विचार को, कि गुप्तकालीन सिक्का शास्त्रीय कला की उत्कृष्टता का स्तर बाद के समय में नितांत दर्शनीय नहीं है, किस प्रकार सही सिद्ध करेंगे? (150 शब्द, 10 अंक)

How do you justify the view that the level of excellence of the Gupta numismatic art is not at all noticeable in later times?

उत्तर: अधिक मात्रा में सोने के सिक्के जारी करने की साथ-साथ गुप्तकालीन सिक्कों पर विविध प्रकार के रूपांकनों और अभिलेखों के उत्कीर्णन के कारण गुप्तकाल में सिक्का शास्त्रीय कला का उत्कृष्ट स्तर दिखाई देता है।

गुप्तकालीन सिक्कों पर कलात्मक उत्कृष्टता के उदाहरण

- चंद्रगुप्त ने सर्वप्रथम सिक्कों का प्रचलन शुरू किया।
  - सिक्के उस समय की आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक दशाओं का वर्णन करते हैं।

  उदाहरण– अधिक सिक्कों का प्रयोग आर्थिक संपन्नता को दर्शाता है।
- राजाओं द्वारा सिक्कों पर अंकन करवाना

  उदाहरण– हिंदू-पौराणिक परंपराओं को दर्शाया गया है।

- राजा-रानी द्वारा संयुक्त रूप से सिक्कों को जारी करना इनकी विलक्षणता है।
- विभिन्न प्रकार के उत्कीर्णन द्वारा सिक्कों में विविधता लाई गई
  उदाहरण– देवियों की आकृति, गरुड़ का चित्रण, समुद्रगुप्त को वीणा बजाते दिखाया जाना।
- मिश्र धातुओं का प्रयोग
  उदाहरण– सोना, तांबा, चाँदी आदि। (सोने के सिक्के दीनार एवं चाँदी के सिक्के रूपक)

गुप्तकाल के पश्चात् उत्कृष्टता का स्तर न दिखाई देने के कारण

- गुप्तकाल धर्म में मानवीय प्रतिरूपों के चित्रण की मनाही।
- दक्षिण के शासकों द्वारा केवल शासकीय चिह्नों को स्थान देना।
  उदाहरण– चोलों द्वारा बाघ एवं चालुक्यों द्वारा जंगली सूअर का चित्रण।
- गुप्तकाल के पश्चात् आर्थिक उन्नति का उच्च स्तर न मिलना।
- उपयोग में कमी के कारण उत्कृष्टता व मौलिकता का अभाव।

गुप्तकालीन सिक्का शास्त्रीय कला अपनी गुणवत्ता, उत्कृष्टता एवं विविधता के कारण सिक्का शास्त्र में विशिष्ट स्थान रखती है, किंतु बाद के कालों में इसका अभाव दृष्टिगोचर होता है।

2016

प्रश्न: प्रारंभिक बौद्ध स्तूप कला, लोक वर्ण्य विषयों एवं कथानकों को चित्रित करते हुए बौद्ध आदर्शों की सफलतापूर्वक व्याख्या करती है। विशदीकरण कीजिये। (200 शब्द, 12½ अंक)

Early Buddhist stupa-art, while depicting folk motifs and narratives successfully expounds Buddhist ideals. Elucidate.

उत्तर: कला की विशेषता होती है कि वह अपने देश काल की प्रवृत्तियों और आदर्शों को सफलतापूर्वक व्यक्त करती है प्रारंभिक बौद्ध स्तूप भी कला की इस विशेषता का अपवाद नहीं हैं। इन स्तूपों में चित्रित साधारण जन-जीवन के विषयों एवं कथानकों के द्वारा बौद्ध आदर्शों की व्याख्या की जा सकती है।

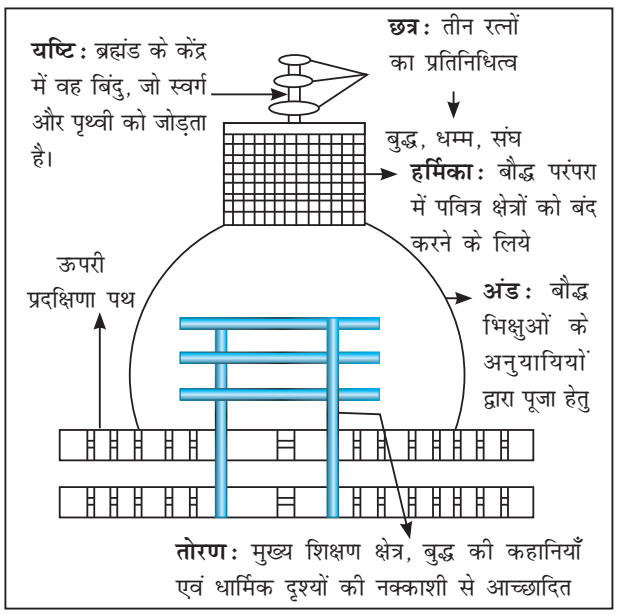

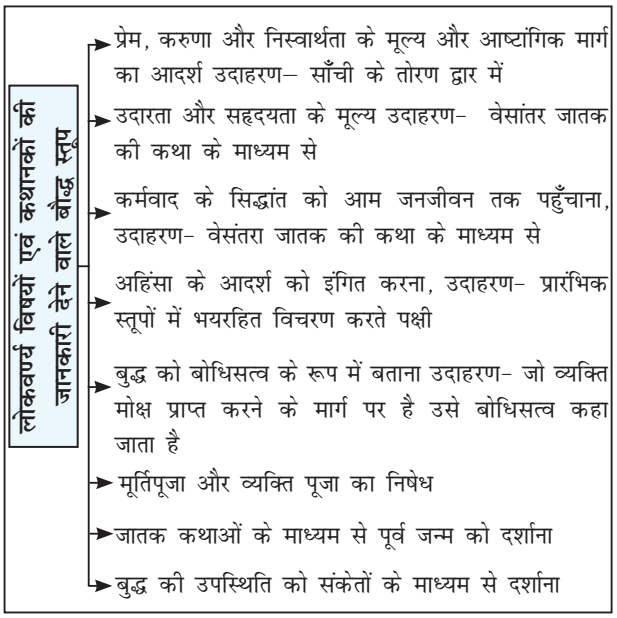

इन स्तूपों में चित्रित कथानक ही नहीं वरन् इन स्तूपों की वास्तुकला भी बौद्ध आदर्शों की सफलतापूर्वक व्याख्या करती है। अतः बौद्ध स्तूप कला को समग्रतापूर्वक तभी जाना जा सकता है, जब हमें बौद्ध आदर्शों की समझ हो।

प्रश्न: विजयनगर नरेश कृष्णदेव राय न केवल स्वयं एक कुशल विद्वान थे अपितु विद्या एवं साहित्य के महान संरक्षक भी थे। विवेचना कीजिये। (200 शब्द, 12½ अंक)

Krishnadeva Raya, the King of Vijayanagar, was not only an accomplished scholar himself but was also a great patron of learning and literature. Discuss.

उत्तर: कृष्णदेव राय दक्षिण भारत के इतिहास में विजयनगर साम्राज्य (1336-15 ई.) के महत्त्वपूर्ण शासक थे, जिन्होंने अपना साम्राज्य लगभग पूरे दक्षिण भारत में स्थापित किया। कृष्णदेव राय ने साम्राज्य स्थापना के साथ कला एवं साहित्य के उत्थान में महत्त्वपूर्ण कार्य किये।

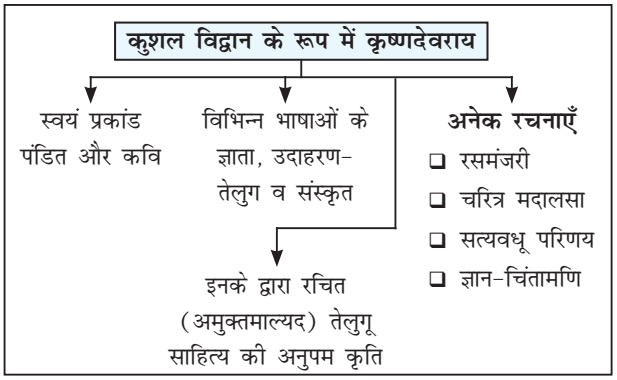

विद्या एवं साहित्य के महान संरक्षक के रूप में कृष्णदेवराय

- साहित्यिक गोष्ठियों का आयोजन
- साहित्य में योगदान के कारण 'आंध्रभोज' की उपाधि
- कवियों और साहित्यिक विद्वानों को संरक्षण, उदाहरण- अल्लसानी पेद्दाना को संरक्षण
- कर्नाटक संगीत शैली के विकास में योगदान उदाहरण- व्यासराय जैसे संगीतकारों को आश्रय प्रदान करना
- भरतनाट्यम् और कुचिपुड़ी जैसे नृत्यों को प्रोत्साहन
- अष्टदिग्गज आठ कवियों का समूह उदाहरण- (तेनाली रामकृष्ण, नंदि तिम्माना, पिंगली सूरनों आदि)
- प्रबंध काव्यों के माध्यम से द्रविड़ साहित्य को सांस्कृतिक पृष्ठभूमि प्रदान किया, उदाहरण- रामायण, महाभारत, नलदमयंती कथा
- भुवन विजयमु नामक सभा भवन की स्थापना (साहित्यिक गोष्ठियों के आयोजन हेतु)
- स्थापत्य के संदर्भ में भी कार्य किया, उदाहरण- विट्ठल हजारा मंदिर

उपर्युक्त विवेचना के आधार पर कहा जा सकता है कि कृष्णदेवराय ने न केवल कला एवं साहित्य लेखन में रुचि दिखाई अपितु उचित प्रबंधन कर अन्य कलाकारों के साहित्यों को फलने-फूलने का अवसर प्रदान किया। यही कारण है कृष्णदेवराय के काल को दक्षिण भारत के इतिहास में कला एवं साहित्य के क्षेत्र में 'स्वर्णयुग' के नाम से भी जाना गया।

अतिरिक्त जानकारी

कृष्णदेवराय के काल में पुर्तगाली यात्री बारबोसा एवं निकोलो दे कोंटी आए थे।

2015

प्रश्न: "भारत की प्राचीन सभ्यता मिस्र, मेसोपोटामिया और ग्रीस की सभ्यताओं से इस बात में भिन्न है कि भारतीय उपमहाद्वीप की परंपराएँ आज तक भंग हुए बिना परिरक्षित की गई हैं।" टिप्पणी कीजिये। (200 शब्द, 12½ अंक)

The ancient civilization in Indian sub-continent differed from those of Egypt, Mesopotamia and Greece in that its culture and traditions have been preserved without a breakdown to the present day. Comment.

उत्तर : मिस्र (3100 ईसा पूर्व), मेसोपोटामिया (3300 ईसा से 200 ईसा पूर्व तक), ग्रीस (1500 ईसा पूर्व) तथा प्राचीन भारत (3300-1700 ईसा पूर्व) की सभ्यताएँ विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में से प्रमुख है। भारत की प्राचीन सभ्यताएँ या तो नष्ट हो गई या फिर प्रतिस्थापित कर दी गईं। इसके विपरीत भारतीय उपमहाद्वीप की परंपराएँ आज तक भंग हुए बिना परिरक्षित की गई हैं।

तुलना के बिंदु

मिस्र सभ्यता	❑ सभ्यता के लोग प्रकृति पूजक और बहुदेववादी ❑ ममी के रूप में शवों को संरक्षित करने की परंपरा जारी ❑ प्राचीन भाषाएँ लगभग विलुप्त
मेसोपोटामिया सभ्यता	❑ बहुदेववादी अर्थात् एक से ज़्यादा देवताओं को मानना ❑ शवों को दफनाया जाता था, सुरक्षित रखने के लिये लेप लगाया जाता था, जिसे 'ममी' कहते हैं। ❑ विलुप्त
यूनान सभ्यता	❑ बहुदेववादी स्वरूप, किंतु ईसाई धर्म ने व्यापक परिवर्तन किया ❑ मिट्टी के नीचे दफनाते थे ❑ विलुप्त
भारतीय सभ्यता	❑ सिंधु घाटी से लेकर वर्तमान तक मातृदेवी, शिव पशुपति जैसे देवताओं की पूजा जारी ❑ सूर्य, वृक्ष, पशु-पक्षी, नदी पूजन, शवाधान की परंपराएँ जारी है। ❑ भारत में संस्कृत, तमिल आज भी प्रयोग में

भारतीय परंपराओं के वर्तमान तक परिरक्षित रहने के उदाहरण

- शंतरज का खेल, चूड़ियों एवं साड़ियों का प्रचलन
- धार्मिक कर्मकांड, यज्ञ हवन की निरंतरता आज भी
- हिन्दू धर्म, वेद, उपनिषद, पुराण, महाकाव्य वैवाहिक पद्धति आज भी जारी
- प्राचीन स्नान की परंपरा, उदाहरण– नदी स्नान अनवरत जारी
- नाग पूजा
- प्राचीनकाल के खानपान की वर्तमान पर अमिट छाप उदाहरण– दूध, दही
- अद्भुत सामंजस्य उदाहरण- मंगोल, मुस्लिम विदेशी के रूप में आए, लेकिन भारतीय संस्कृति ने अपने में समेट लिया, इसे वर्तमान में भी देखा जा सकता है।

भारतीय संस्कृति अपने में सहिष्णुता, आध्यात्मिकता और भौतिकवाद में अद्भुत सामंजस्य, नैतिकता व 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के भाव को संजोए' हुए है। अन्य संस्कृतियाँ समय के साथ नष्ट होती जा रही हैं, किंतु भारतीय संस्कृति उदारता तथा समन्वयवादी गुणों के साथ अन्य संस्कृतियों को भी अपने में समाहित कर अपने परंपरागत अस्तित्व के साथ अजर-अमर बनी हुई है।

प्रश्न: भारत की मध्यपाषाण शिला-कला न केवल उस काल के सांस्कृतिक जीवन को बल्कि आधुनिक चित्रकला से तुलनीय परिष्कृत सौंदर्य बोध को भी प्रतिबंधित करती है। इस टिप्पणी का समालोचनात्मक मूल्यांकन कीजिये।

(200 शब्द, 12½ अंक)

Mesolithic rock cut architecture of India not only reflects the cultural life of the times but also a fine aesthetic sense comparable to modern painting. Critically evaluate this comment.

उत्तर: चित्रकला, कला के सर्वाधिक कोमल रूपों में से एक है। प्रागैतिहासिक काल में मानव ने अपनी सौंदर्यपरक सृजनात्मक प्रेरणा को संतुष्ट करने के लिये शैलाश्रय चित्र बनाए। शिल्पकला के साक्ष्य कैमूर की पहाड़ियों, विंध्य पहाड़ियों एवं उत्तर प्रदेश के कुछ स्थानों की गुफाओं से प्राप्त होते हैं।

मध्यपाषाण काल की चित्रकला की विशेषताएँ

- शुरुआत लगभग 10,000 ईसा पूर्व तथा समाप्ति 8000 ई. पूर्व के बीच
- मानव जीवन के विविध पक्षों का सूक्ष्मता से चित्रांकन, उदाहरण– युद्ध
- चित्रों के विषय मुख्यत: शिकार के दृश्य, उदाहरण– समूहों में शिकार करते लोग
  - काँटेदार भाले, नोकदार डंडे, तीर कमान लेकर शिकार करते लोग
- जानवरों का चित्रण, उदाहरण– छोटे-बड़े सभी जानवरों एवं पक्षियों को चित्रित करना
- प्राकृतिक रंग (लाल, हरा, नीला) के साथ अन्य का भी प्रयोग उदाहरण गेरूआ, पीला
- भावी पीढ़ी को जीवन की क्रियाओं व यथार्थवादी दृष्टिकोण से परिचित कराने का भाव, उदाहरण– रहन-सहन, आखेटक, असुरक्षित जीवनशैली
- सामाजिक जीवन, उदाहरण– चित्रों में युवा, बूढ़े, बच्चे व महिलाओं को समान रूप से स्थान
- सौंदर्य बोध की क्षमता को विकसित कर लिया था, उदाहरण– चित्रों के केंद्र में मनुष्य व प्रकृति

मध्यपाषाणकालीन चित्रकला और आधुनिक चित्रकला की तुलना

- मध्यपाषाणकालीन चित्रकला में संबंधी पक्षों की उपस्थिति, जबकि आधुनिक चित्रकला में इसका अभाव दिखता है।
- आधुनिक चित्रकला में व्यापक सांस्कृतिक और परिष्कृत सौंदर्य बोध होने के कारण मध्यपाषाणिक शैल चित्रों से तुलना
- मध्यपाषणिक चित्रकला उन्मुक्त प्रवृत्ति की थी, जबकि आधुनिक चित्रकला नियमों से आबद्ध, उदाहरण– मध्यपाषाणिक तत्कालीन जीवन के आदर्शों को बताती है। आधुनिक चित्रकला में सौंदर्य पक्ष पर विशेष बल
- विभिन्न नियमों से आबद्ध होने के कारण आधुनिक चित्रकला की, स्वयं की मौलिकता समाप्त हो गई।

यह स्वाभाविक है कि आधुनिककालीन चित्रकला अत्यधिक विकसित और परिष्कृत है, किंतु मध्य पाषाणिक कला सीमित संसाधनों में बेहतर कौशल का परिचय कराती हुई उस समय के जीवन दर्शन को निरूपित करती है, उदाहरण– भीमबेटका के गुफा शैल चित्रों का लगभग 1200 वर्षों तक जीवंत बने रहना।

2014

प्रश्न: तक्षशिला विश्वविद्यालय विश्व के प्राचीनतम विश्वविद्यालयों में से एक था, जिसके साथ विभिन्न शिक्षण-विषयों (डिसिप्लिंस) के अनेक विख्यात विद्वान व्यक्तित्व संबंधित थे। उसकी रणनीतिक अवस्थिति के कारण उसकी कीर्ति फैली, लेकिन नालंदा के विपरीत, उसे आधुनिक अभिप्राय में विश्वविद्यालय नहीं समझा जाता है, चर्चा कीजिये।

(150 शब्द, 10 अंक)

Taxila University was one of the oldest universities of the world with which were associated a number of renowned learned personalities of different disciplines. Its strategic location caused its fame to flourish, but unlike Nalanda, it is not considered as a university in the modern sense. Discuss.

उत्तर: तक्षशिला व नालंदा विश्वविद्यालय भारत व विश्व के अग्रणी संस्थानों में से एक थे, जिसकी अवस्थिति क्रमश: वर्तमान में पाकिस्तान के रावलपिंडी तथा बिहार के नालंदा ज़िले के राजगीर में स्थित है।

इन शिक्षण संस्थानों से संबंधित विख्यात विद्वान व व्यक्तित्व

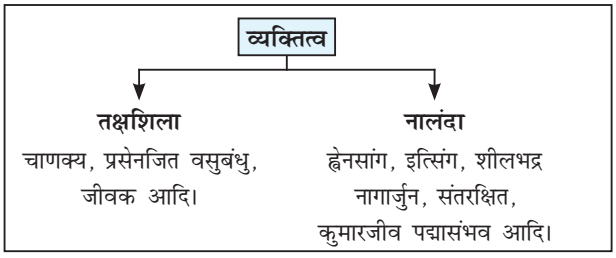

तक्षशिला की प्रसिद्धि के कारण

- **महत्त्वपूर्ण रणनीतिक अवस्थिति:** यह तीन महान मार्गों के संगम पर स्थित था, जैसे– उत्तरापथ, उत्तर पश्चिमी मार्ग सिंधु नदी मार्ग।
- 60 से अधिक विषयों के अध्यापन की व्यवस्था
- शिक्षकों की विषय विशेषज्ञता के कारण प्रसिद्धि
- पाणिनी द्वारा अष्टाध्यायी की रचना यहीं की गई

उपर्युक्त विशेषताओं के बावजूद तक्षशिला विश्वविद्यालय को नालंदा विश्वविद्यालय के समान आधुनिक विश्वविद्यालय का दर्जा प्राप्त नहीं हो सका, जिसके निम्नलिखित कारण हैं–

- नालंदा विश्वविद्यालय में आधुनिक विश्वविद्यालय जैसी सभी सुविधाएँ मौजूद थीं, जैसे– पुस्तकालय, छात्रावास, शैक्षणिक कक्ष आदि। जबकि तक्षशिला विश्वविद्यालय में छात्रवास व शैक्षणिक कक्षों जैसी सुविधाओं का अभाव।
- तक्षशिला में शिक्षण व पाठ्यक्रम से संबंधित कोई केंद्रीकृत व्यवस्था नहीं थी, जबकि नालंदा में सुव्यवस्थित व्यवस्था थी।
- तक्षशिला में परीक्षा पद्धति का अनुसरण नहीं था, जिस कारण वह नालंदा के विपरीत छात्रों को उपाधियाँ प्रदान नहीं करता था।
- तक्षशिला में सामान्यत: शिक्षकों द्वारा स्ववित्त पोषण से स्वायत्त शैक्षणिक संस्थान चलाए जाते थे, जबकि नालंदा को विभिन्न शासकों व स्थानीय जमींदारों से संरक्षण प्राप्त था।

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि शिक्षा और ज्ञान के संदर्भ में तक्षशिला व नालंदा विश्वविद्यालय बहुत ही प्रभावी वह प्रतिष्ठित थे, किंतु दोनों के कार्य करने की पद्धति में भिन्नता थी। इसके साथ ही समय काल के अंतराल ने भी इनकी संरचनात्मक विशेषताओं को प्रभावित किया।

प्रश्न: सूफी और मध्यकालीन रहस्यवादी सिद्ध पुरुष (संत) हिंदू/मुसलमान समाजों के धार्मिक विचारों और रीतियों को या उनकी बाह्य संरचना को पर्याप्त सीमा तक रूपांतरित करने में विफल रहे। टिप्पणी कीजिये। (150 शब्द, 10 अंक)

Sufis and medieval mystic saints failed to modify either the religious ideas and practices or the outward structure of HinduèkMuslim societies to any appreciable extent. Comment.

उत्तर: मध्यकालीन भारत सामाजिक एवं धार्मिक स्तर पर जाति, वर्ण, वर्ग एवं लिंग के आधार पर बँटा हुआ था। उपर्युक्त समस्याओं के बीच भक्ति व सूफी परंपरा की विचारधारा का तेजी से विकास हुआ। सूफी एवं भक्ति संतों के अतंर्गत निजामुद्दीन औलिया, ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती बाबा फरीद कबीर एवं गुरु नानक, नामदेव आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

- सूफी व भक्ति परंपरा द्वारा धार्मिक विचारों व रीतियों को प्रभावित करने के निम्नलिखित प्रयास किये गए।
- सूफियों ने रूढ़िवादी परिभाषाओं व धर्माचार्यों द्वारा की गई कुरान तथा हदीसों की बौद्धिक व्याख्या की आलोचना की, साथ ही उसे मानव केंद्रित बनाने का प्रयास किया।
- भक्ति आंदोलन के संतों द्वारा मानव समानता पर बल देते हुए सरल व सहज जीवन पद्धति अपनाने की बात कही गई।
- भक्ति व सूफी संत सभी धर्मों की मौलिक समता एवं ईश्वर की एकता पर बल देते हुए धार्मिक कर्मकांडों एवं आडंबरों का विरोध कर सहज भक्ति एवं विश्वास पर बल देते थे।

उपरोक्त प्रयासों के बावजूद सूफी व भक्ति संत समाज में परिवर्तन लाने में सफल नहीं रहे, क्योंकि

- संस्थागत ढाँचा का अभाव, जिस कारण संदेशों की पहुँच सीमित
- भौगोलिक पहुँच का सीमित होना
- रहस्यवाद का बोलबाला था
- जिन सामाजिक-धार्मिक रीति-रिवाज़ों पर प्रहार किया था उनके विकल्प देने में असफल रहे थे
- इन संतों के विचारों में एकरूपता का अभाव
- अनुयायी समाज के निचले वर्गों के लोग

अत: हम कह सकते हैं कि सूफी व मध्यकालीन संतों ने भले ही तत्कालीन समाज के धार्मिक विचारों व रीतियों को पर्याप्त रूप में न बदल पाया हो, फिर भी इन संतों ने एक सकारात्मक परिवर्तन लाने का प्रयास किया, जिससे आगे चलकर भारतीय समाज एवं संस्कृति को एक नवीन रूपरेखा मिली।

प्रश्न: गांधार मूर्तिकला रोमनवासियों की उतनी ही ऋणी थी, जितनी कि वह यूनानियों की थी। स्पष्ट कीजिये। (150 शब्द, 10 अंक)

Gandhara sculpture owed as much to the Romans as to the Greeks. Explain.

उत्तर: यूनानी कला के प्रभाव से देश के पश्चिमोत्तर प्रदेशों में कला की जिस नवीन शैली का उदय हुआ, उसे गांधार शैली कहा जाता है। यह विशुद्ध रूप से बौद्ध धर्म से संबंधित धार्मिक प्रस्तर मूर्तिकला शैली है, जिसका उदय कनिष्क प्रथम के समय हुआ। तक्षशिला, कपिशा पुष्कलावती, बामियान आदि इसके प्रमुख केंद्र रहे।

गांधार मूर्तिकला शैली, यूनानी, रोमन ईरानी तथा देशज कलाओं का मिश्रण थी जिसे निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है–

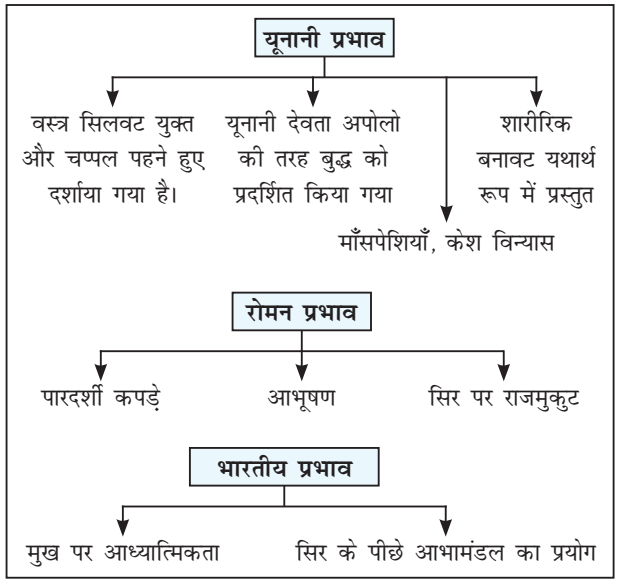

अत: इस शैली में निर्मित मूर्तियों में यूनानी, रोमन भारतीय व ईरानी कला का स्पष्टत: प्रभाव देखा जा सकता है, जिन्हें अलग करना कठिन प्रतीत होता है। इसलिये हम कह सकते हैं कि गांधार मूर्तिकला शैली सही अर्थों में पश्चिमी वेशभूषा में भारतीय संस्कृतिक का प्रतिनिधित्व करती है।

प्रश्न: सिंधु घाटी सभ्यता की नगरीय योजना और संस्कृति ने किस सीमा तक वर्तमान युगीन नगरीकरण को निवेश (इनपुट) प्रदान किया है? चर्चा कीजिये। (150 शब्द, 10 अंक)

To what extent has the urban planning and culture of the Indus Valley Civilization provided inputs to the present day urbanization? Discuss.

उत्तर: सिंधु घाटी सभ्यता भारतीय उपमहाद्वीप की सबसे पुरानी ज्ञात शहरी संस्कृति है। इस सभ्यता की कालावधि लगभग 2500-1700 ईसा पूर्व प्रतीत होती है। इसकी खोज 1921 में दयाराम साहनी द्वारा की गई है। सिंधु सभ्यता में खोजा गया प्रथम स्थल हड़प्पा था, इसलिये इसे 'हड़प्पा सभ्यता' भी कहा गया है। सिंधु घाटी सभ्यता की नगरीय योजना और संस्कृति को वर्तमान की नगरीय योजना में स्पष्टत: देखा जा सकता है जैसे–

- चौड़ी सड़कें, जो समकोण पर काटती थीं, ढकी हुई नालियाँ व मैनहोल जैसे- चंडीगढ़।
- रसोईघर, शौचालय, कतार में बने आवासीय भवन।
- अंतर्राज्यीय एवं अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, कारखाने (मनके एवं धातु बनाने के) बंदरगाह (लोथल) आदि को महानगरों के संदर्भ में देखा जा सकता है। उदाहरण- मुंबई, कोलकाता आदि।
- आवासों में वर्ग विभेदन का स्वरूप (वर्तमान के शहरों में रिहायशी एवं मलिन बस्तियों के रूप में)
- गैर-कृषक शिल्पी एवं व्यापारी वर्ग का नगरों में सकेंद्रण।
- वृक्ष पूजा, पशु पूजा, जादूटोना, मातृपूजा (देवी दुर्गा, पार्वती के रूप में वर्तमान में), बलि प्रथा जैसी सांस्कृतिक विशेषताएँ वर्तमान समाज में भी प्रचलित है।

अत: यह सभ्यता जीवन के नियोजित स्वरूप में अपने समय से कहीं आगे थी, जो इसके संस्कृति एवं नगरीकरण के माध्यम से वर्तमान युग में परिलक्षित होती है।

2013

प्रश्न: दक्षिण भारत के राजनीतिक इतिहास की दृष्टि से अधिक उपयोगी न होते हुए भी संगम साहित्य उस समय की सामाजिक व आर्थिक स्थिति का अत्यंत प्रभावी शैली में वर्णन करता है टिप्पणी कीजिये। (200 शब्द, 10 अंक)

Though not very useful from the point of view of a connected political history of South India, the Sangam literature portrays the social and economic conditions of its time with remarkable vividness. Comment.

उत्तर: कृष्णा एवं तुंगभद्रा नदी के दक्षिण में लगभग 300 ई. पू. से 200 ई. के बीच की अवधि को 'संगमकाल' कहते हैं। पांड्य राजाओं द्वारा मदुरै में आयोजित विद्वानों के सम्मेलनों को 'संगम' कहा जाता था। इन संगमों में रचे गए साहित्यों को 'संगम साहित्य' कहा जाता है।

सुदूर दक्षिण भारत के प्रारंभिक राजनैतिक, सामाजिक व आर्थिक इतिहास को जानने में संगम साहित्य की महत्त्वपूर्ण भूमिका है, जिसे हम निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझ सकते हैं–

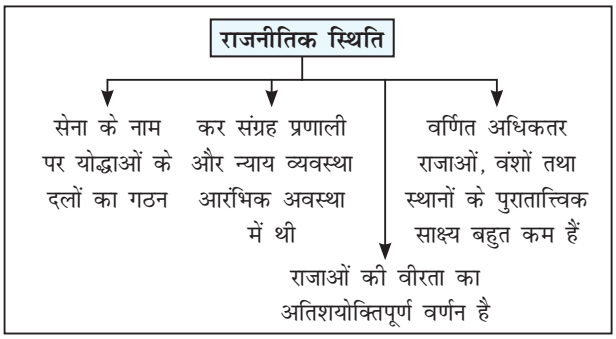

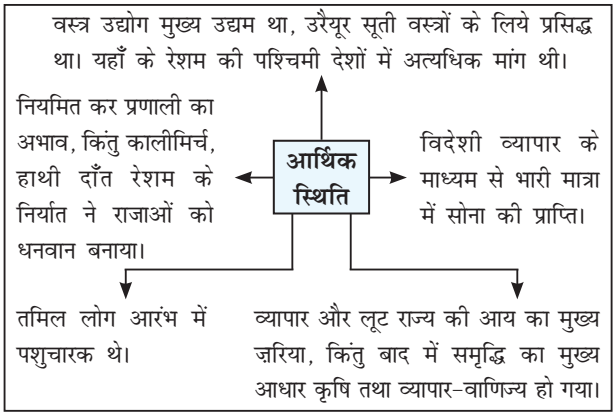

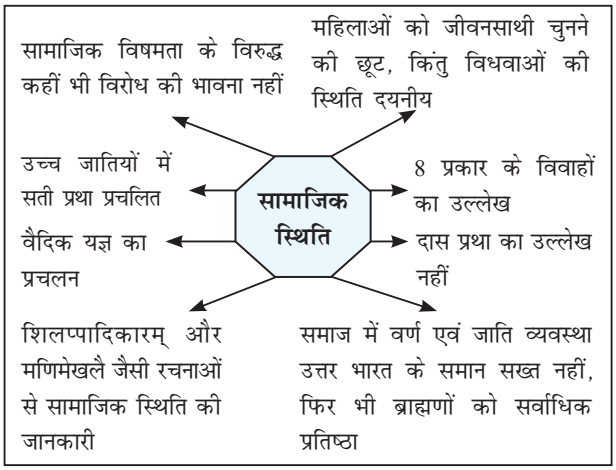

अत: यह कहा जा सकता है कि संगम साहित्य राजनीतिक दृष्टि से भले ही उतना महत्त्वपूर्ण न हो, किंतु यह तत्कालीन लोगों के सामाजिक आर्थिक व मनोवैज्ञानिक स्थितियों के बारे में जानकारी का एक बेहतर स्रोत है।

प्रश्न: आरंभिक भारतीय शिलालेखों में अंकित तांडव नृत्य की विवेचना कीजिये। (100 शब्द, 5 अंक)

Discuss the Tandava dance as recorded in the early Indian inscriptions.

उत्तर: तांडव नृत्य का संबंध भगवान शिव से माना जाता है। भगवान शिव को पौराणिक मान्यता के अनुसार नृत्य का देवता भी माना जाता था। इससे संबंधित रूप को आज हम 'नटराज' के रूप में भी जानते

हैं। इस नृत्य का संबंध ब्राह्मांड के सृजन व संहार के साथ ही पृथ्वी पर जन्म-मृत्यु से भी माना जाता है।

भरत मुनि के 'नाट्यशास्त्र' में तांडव नृत्य की निम्नलिखित विशेषताएँ बताई गई हैं–

- 108 हस्त मुद्राओं, हाव-भाव एवं शारीरिक मुद्राओं का वर्णन।
- अत्यधिक ऊर्जा व भाव-भंगिमाओं की आवश्यकता।
- मुख्यत: दो रूप-आनंद तांडव व रुद्र तांडव
- आंतरिक शक्ति के पाँच चित्रात्मक भावों का प्रकटीकरण जैसे–
  - अनुग्रह: मोक्ष
  - सृष्टि: सृजन से संबंधित
  - स्थिति: सहायक व संरक्षक
  - संहार: विनाश
  - तिरोभाव : मोहमाया
- तांडव नृत्य के संदर्भ में कुछ पौराणिक मान्यताएँ भी प्रचलन में है, जैसे–
  - सती के अग्निकुंड में कूदने के दौरान वियोग व क्रोध में शिव द्वारा किया गया।
  - भगवान कृष्ण द्वारा कालिया नाग के ऊपर किया गया।
  - इंद्र द्वारा जैन तीर्थंकर ऋषभदेव के जन्म पर किया गया।

उपरोक्त विवेचना के अनुसार स्पष्ट होता है कि शिव ही तांडव नृत्य के जन्मदाता हैं और तांडव नृत्य ही अन्य नृत्यों का आधार, क्योंकि तांडव नृत्य में उल्लेखित हस्तमुद्राएँ, हाव-भाव आदि अन्य सभी प्रकार के नृत्यों से समानता रखती है।

प्रश्न: मंदिर वास्तुकला के विकास में चोल वास्तुकला का उच्च स्थान है। विवेचना कीजिये। (100 शब्द, 5 अंक)

Chola architecture represents a high watermark in the evolution of temple architecture. Discuss.

उत्तर : मंदिर स्थापत्य की द्रविड़ शैली का प्रारंभ भले ही पल्लवों के काल में हुआ हो, किंतु उसका चरमोत्कर्ष चोल काल (8वीं शताब्दी में विजयालय द्वारा स्थापित) में देखा गया। तंजौर का वृहद्देश्वर मंदिर द्रविड़ शैली का सर्वोत्तम नमूना है, साथ ही इस काल में बनी नटराज की काँस्य मूर्ति को भी ख्याति प्राप्त है।

चोलकालीन द्रविड़ शैली के कुछ अन्य प्रमुख मंदिरों के उदाहरण निम्न हैं।

उदाहरण– राजराजेश्वर मंदिर, गंगईकोंडचोलपुरम्, एरावतेश्वर मंदिर

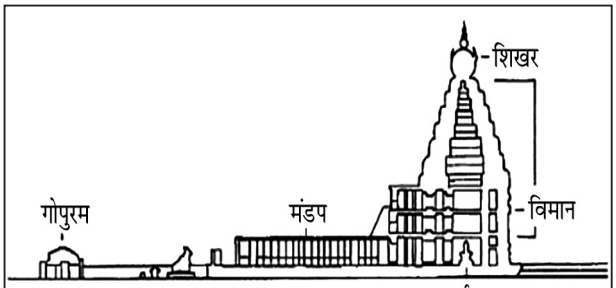

द्रविड़ शैली स्थापत्य

चोलकालीन द्रविड़ शैली की विशेषताएँ

- मंदिर कई मंजिलों में होते थे।
- प्रांगण में जलकुंड होते थे।
- मुख्य देवी देवता के स्थान पर राजा-रानियों की मूर्तियाँ तथा युद्ध के दृश्यों को स्थान।
- ईंट की जगह पत्थर व शिलाओं का प्रयोग।
- काँसे की मूर्तियों में प्रमुख विषय शिव-पार्वती के थे।
- विमान अधिक ऊँचे व छत पिरामिडनुमा आधार वर्गाकार था।
- मंदिर मुख्यत: विशाल प्रांगण से घिरे होते थे, जिसमें अनेक छोटे-बड़े मंदिर होते थे।
- प्रांगण का मुख्य द्वार गोपुरम् कहलाता था।

अत: यह कहा जा सकता है कि चोल काल मंदिर वास्तुकला की द्रविड़ शैली का प्रतीक था, जिन्होंने मध्ययुगीन भारत में कुछ सबसे बड़े भव्य मंदिरों का निर्माण किया। इन मंदिरों की भव्यता के कारण ही इस काल के स्थापत्य को दक्षिण भारत का स्वर्ण काल कहा जाता है।